सत्ता की सीमाएं (Limitations of Authority)

सत्ता के प्रयोग और परिचालन पर अनेक प्रतिबन्ध होते हैं जिससे उनका मनमाना प्रयोग न किया जा सके। ये प्रतिबन्ध प्राकृतिक, उद्देश्यगत, आन्तरिक, बाहरी और प्रक्रिया सम्बन्धी भी हो सकते हैं। किसी भी राजनीतिक व्यवस्था को यह अधिकार नहीं हो सकता है कि वह व्यक्ति को उसके जीवन, सामान्य स्वतन्त्रताओं और सीमित सम्पत्ति से भी वंचित कर दे। यह सत्ता की प्राकृतिक सीमा है। प्रत्येक राजनीतिक व्यवस्था के कुछ निर्धारित और उद्घोषित लक्ष्य होते हैं तथा सत्ता इन लक्ष्यों एवं आदर्शों का उल्लंघन नहीं कर सकती। व्यवस्थाएं संस्कृति, मूल्यों, परम्पराओं, रूढ़ियों, आदि नैतिक अवधारणाओं में बंधी रहती है तथा उन्हें सांवैधानिक कानूनों एवं राजनीतिक परिस्थितियों में रहकर कार्य करना होता है। प्रत्येक व्यवस्था कुशल कार्य संचालन के लिए अनेक नियम एवं उपनियम बना लेती है। साथ ही कार्य की सुगमता के लिए योजनाएं एवं नीतियां निर्धारित की जाती है; ये नियम-उपनियम, नीतियां एवं योजनाएं सत्ता की सीमाएं निर्धारित करते हैं। इसके अतिरिक्त विभिन्न व्यवस्थाओं में प्रायः उनमें कार्य करने वाले कर्मचारी अपने निजी हितों की वृद्धि के लिए संघ, आदि बनाकर सामूहिक सौदेबाजी करते हैं यह स्थिति भी सत्ता पर अवरोध लगा देती है। इसके अतिरिक्त वर्तमान समय में अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के अस्तित्व और अन्तर्राष्ट्रीय कानूनों की अधिक मान्यता ने भी सत्ता पर सीमाएं लगा दी है।

Avinash

Scanned with CamScanner

इन सबके अतिरिक्त सत्ता का प्रयोग मनुष्यों द्वारा होता है और मानव क्षमताएं सीमित होने के नाते भी सत्ता की सीमाएं स्थापित हो जाती हैं।

राजनीतिक चिन्तन की सार्थकता सत्ता को सामर्थ्य प्रदान करने तथा साथ ही साथ उस पर सीमाएं लगाने में ही है, जिससे सत्ता की जनहितकारिणी स्थिति बनी रहे।